CS (Main) Exam : ,2014

162

HINDI
Paper II
(LITERATURE)

वियोज्य *DETACHABLE*

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 250

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions.

There are EIGHT questions divided in two Sections.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Question No. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in HINDI.

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिए : 10×5=50

1.(क) सँदेसनि मधुबन-कूप भरे। 10
जो कोउ पथिक गए हैं ह्याँ तें फिरि नहिं अवन करे ॥
कै वै स्याम सिखाय समोधे कै वै बीच मरे ?
अपने नहिं पठवत नंदनंदन हमरेउ फेरि धरे ॥
मसि खूँटी कागद जल भींजे, सर दव लागि जरे।
पाती लिखैं कहो क्यों करि जो पलक-कपाट अरे ?

1.(ख) अवगुन एक मोर मैं माना। 10
बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना ॥
नाथ सो नयनन्हि को अपराधा।
निसरत प्रान करहिं हठि बाधा ॥
बिरह अगिनि तनु तूल समीरा।
स्वास जरइ छन माहिं सरीरा ॥
नयन स्रवहिं जलु निज हित लागी।
जरैं न पाव देह बिरहागी ॥

1.(ग) शांति-बीन तब तक बजती है 10
नहीं सुनिश्चित सुर में,
स्वर की शुद्ध प्रतिध्वनि जब तक
उठे नहीं उर-उर में।
यह न बाह्य उपकरण, भार बन
जो आवे ऊपर से,
आत्मा की यह ज्योति, फूटती
सदा बिमल अंतर से ॥

1.(घ) "विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा
स्पंदित विश्व महान, 10
यही दु:ख-सुख, विकास का सत्य यही
भूमा का मधुमय दान।
नित्य समरसता का अधिकार उमड़ता
कारण-जलधि समान,
व्यथा से नीली लहरों बीच बिखरते
सुख-मणिगण द्युतिमान ॥"

1.(ङ) "श्रेय नहीं कुछ मेरा: 10
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में –
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने
सब-कुछ को सौंप दिया था –
सुना आपने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का था :
वह तो सब-कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाता है।"

2.(क) क्या कबीर ने अनीश्वरत्व के निकट पहुँच चुके भारतीय जनमानस को निर्गुण ब्रह्म की भक्ति की ओर प्रवृत्त होने की उत्तेजना प्रदान की ? तर्क सम्मत उत्तर दीजिए। 20

2.(ख) ठेठ अवधी भाषा के माधुर्य और भावों की गंभीरता की दृष्टि से 'पद्मावत' महाकाव्य निराला है। विवेचन कीजिए। 15

2.(ग) बिहारी की कविता के साक्ष्य से बताइए कि कवि की धर्म और दर्शन के क्षेत्रों में पैठ थी। 15

3.(क) सोदाहरण स्पष्ट कीजिए कि सूर ने योगमार्ग को संकीर्ण, कठिन और नीरस तथा भक्तिमार्ग को विशाल, सरल और सरस क्यों कहा है ? 20

3.(ख) "बुद्धिवाद के विकास में, अधिक सुख की खोज में, दुख मिलना स्वाभाविक है।" 'कामायनी' के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए। 15

3.(ग) क्या आप समझते हैं कि 'भारत भारती' में व्यक्त कवि के कतिपय विचार पुराने पड़ गये हैं और उनसे सहमत होना कठिन है। इस संदर्भ में 'भारत भारती' की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। 15

4.(क) सोदाहरण विवेचित कीजिए कि 'राम की शक्तिपूजा' के बाद निराला की रचनाओं में आकांक्षा-पूर्ति के स्वप्न क्रमशः कम होते गए हैं। 20

4.(ख) नागार्जुन की कविता लोक-जीवन की भूमि से उग कर, प्रतिबद्धता पर आरूढ़ हो, व्यंग्य के शिखर का स्पर्श करती है। — इस कथन की पुष्टि कीजिए। 15

4.(ग) दिनकर की काव्य भाषा की उन विशेषताओं पर उदाहरण-सहित विचार कीजिए जो उन्हें लोकप्रिय बनाती हैं। 15

SECTION 'B'

5. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य को उद्घाटित कीजिए : 10×5=50

5.(क) यह मेरे अभाव की संतान है। जो भाव तुम थे, वह दूसरा नहीं हो सका, परंतु अभाव के कोष्ठ में किसी दूसरे की जाने कितनी-कितनी आकृतियाँ हैं ! जानते हो मैंने अपना नाम खोकर एक विशेषण उपार्जित किया है और अब मैं अपनी दृष्टि में नाम नहीं, केवल विशेषण हूँ ? 10

5.(ख) बुद्धि की क्रिया से हमारा ज्ञान जिस अद्वैत भूमि पर पहुँचता है, उसी भूमि तक हमारा भावात्मक हृदय भी इस सत्त्व-रस के प्रभाव से पहुँचता है। इस प्रकार अंत में जाकर दोनों पक्षों की वृत्तियों का समन्वय हो जाता है। इस समन्वय के बिना मनुष्यत्व की साधना पूरी नहीं हो सकती। 10

5.(ग) जो कुछ अपने से नहीं बन पड़ा, उसी के दुख का नाम मोह है। पाले हुए कर्तव्य और निपटाये हुए कामों का क्या मोह ! मोह तो उन अनाथों को छोड़ जाने में है, जिनके साथ हम अपना कर्तव्य न निभा सके; उन अधूरे मंसूबों में है, जिन्हें हम पूरा न कर सके। 10

5.(घ) कष्ट हृदय की कसौटी है – तपस्या अग्नि है – सम्राट ! यदि इतना भी न कर सके तो क्या ! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिए सुख करना ही न चाहिए। मेरे इस जीवन के देवता और उस जीवन के प्राप्य ! क्षमा !! 10

5.(ङ) "विद्यापति कवि के गान कहाँ ?" बहुत दिनों बाद मन में उलझे हुए उस प्रश्न का जवाब दिया – ज़िंदगी-भर बेगारी खटने वाले, अपढ़ गँवार और अर्धनग्नों में, कवि ! तुम्हारे विद्यापति के गान हमारी टूटी झोपड़ियों में ज़िंदगी के मधुरस बरसा रहे हैं। – ओ कवि ! तुम्हारी कविता ने मचल कर एक दिन कहा था – चलो कवि, बनफूलों की ओर ! 10

6.(क) द्विवेदीयुगीन निबंधों में भाषा-संस्कार, रुचि-परिमार्जन, वैचारिक परिपक्वता और विषय-विविधता के कारण आए परिवर्तनों को उदाहरणों सहित रेखांकित कीजिए। 20

6.(ख) हजारीप्रसाद द्विवेदी के ललित निबंधों में वैचारिकता किस भाँति अनुस्यूत रहती है ? इस संबंध में युक्तियुक्त उत्तर दीजिए। 15

6.(ग) बालकृष्ण भट्ट और गुलाब राय के निबन्धों की भाषा-शैली की विशेषताओं पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार कीजिए। 15

7.(क) क्या 'स्कन्दगुप्त' नाटक में कल्पना और इतिहास के समन्वय से नाटक के संप्रेषणगत सौन्दर्य में वृद्धि हुई है ? तर्कयुक्त उत्तर दीजिए। 20

7.(ख) इस बात पर सम्यक् रूप से विचार कीजिए कि नई कहानी की यात्रा अनुभव से स्वयं गुजरने की यात्रा है। 15

7.(ग) यदि आपको प्रेमचन्द की सभी कहानियों में से केवल एक ही सर्वोत्तम कहानी चुननी हो तो आप कौन-सी चुनेंगे और क्यों ? 15

8.(क) यदि प्रेमचन्द 'गोदान' को उपन्यास के बदले नाटक के रूप में लिखते, तो आपकी दृष्टि में वे उसमें क्या छोड़ते और क्या जोड़ते ? 20

8.(ख) "इसमें फूल भी हैं शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है, चंदन भी, सुंदरता भी है, कुरूपता भी —मैं किसी से दामन बचाकर नहीं निकल पाया।" — रेणु के इस कथन के आलोक में 'मैला आँचल' का मूल्यांकन कीजिए। 15

8.(ग) " 'महाभोज' उपन्यास में हमारे वर्त्तमान समाज और राजनीति का नकारात्मक यथार्थ-वर्णन तो विश्वसनीय बन पड़ा है, लेकिन सकारात्मक पहलू हवाई आदर्श बन गया है"— इस टिप्पणी के संदर्भ में आप अपना तर्कपूर्ण पक्ष प्रस्तुत कीजिए। 15